चालीसा का पहला रविवार

Caritas INDIA
The Joy of Service...

"ख्रीस्तीयों से आह्वान किया जाता है कि वे उन प्रलोभनों से बचें जो मानवीय जीवन और उनके आजीविका को अमानवीय बनाता है।"

पहले रविवार के लिए विशेष विषयवस्तु

1 मार्च 2020

पहला पाठ – उत्पत्ति ग्रंथ 2:7–9, 3:1–7
दूसरा पाठ – रोमियों के नाम पत्र 5:12–19
सुसमाचार – मत्ती 4:1–11

पवित्र ख्रीस्तत्याग की पृष्ठभूमि

प्रत्येक वर्ष चालीसा हमारे सामने अपने जीवन का जायजा लेने की चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है कि कैसे हम अपने सुविधा के परिधि से बाहर आ सकते हैं। आज हम चालीसा के पहले रविवार में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ आज कि धर्म विधि हमें येसु के चालीस दिन के विरान अनुभव (मरुभूमि का अनुभव) पर मनन चिन्तन करने के लिए आमंत्रित करती है। येसु ख्रीस्त पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर विरान जगह में परखे जाने के लिए आत्मा द्वारा संचालित किए जाते हैं। बहुत से लोग आज भी और पहले भी आत्मा से संचालित होकर जीवन की सच्चाइयों और प्रलोभनों से परखे जाने के लिए विरान जगहों की ओर उत्प्रेरित किए गए थे।

प्रलोभन, पाप और मृत्यु जीवन की सच्चाई है, इन सच्चाईयों से हम कैसे पार हो सकते हैं जैसे येसु ख्रीस्त ने शैतान के सभी प्रपंचों को अपने चालीस दिन के विरान अनुभव के द्वारा विजय प्राप्त की थी। कैरीतास इण्डिया, कैथोलिक विशप कन्फ्रेश ऑफ इण्डिया का एक सामाजिक क्षेत्र चालीसा कालीन अभियान **"समृद्ध जीवन, सतत आजीविका"** के विषय पर आगाज कर रही है। यह हमें गरीबों, हाशिये के लोग और सामाजिक रुप से बहिष्कृत लोगों के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने के लिए हमारा ध्यान आकर्षित करती है।

आज का यह मुख्य विषयवस्तु हमें अपने भाइयों और बहनों के प्रति हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्य का एहसास दिलाता है। जैसे हम चालीसा की यात्रा शुरु कर रहे हैं ईश्वर की विषेश कृपा के लिए प्रार्थना करें जिससे कि हम प्रलोभनों से दूर रहें जो मनुष्यत्व गुणों और आजीविका के संसाधनो से वंचित करता है बल्कि हम मानवीय जीवन की मूल्यों को आगे बढ़ाने का काम करें।

धर्मोपदेश

ख्रीस्त में प्यारे भाइयों एवं बहनों,

कलीसिया चालीसा काल को विश्वासियों के लिए असीमित ईश्वरीय कृपा का एक विषेश समय के रुप में अनुपालन करती है। इस प्रकार कलीसिया उपवास, परहेज, प्रार्थना और दान दक्षिणा के माध्यम से विश्वासियों को पश्चाताप, नवनीकरण, ईश्वर और अपने भाइयों एवं बहनों के साथ बिगड़े हुए रिश्तों का पुर्ननिर्माण के लिए एक आध्यत्मिक यात्रा की शुरुआत करती है। हम ख्रीस्तीय विश्वासी येसु ख्रीस्त के दुखभोग और मरण पर चिन्तन करते हुए अपने आध्यात्मिक यात्रा को तरोताजा करते हैं और ईश्वर की इच्छा पर आश्रित होकर अनन्त जीवन की बाट जोहते हैं जिसे येसु ख्रीस्त ने अपने महिमामय पुनरुत्थान द्वारा हमें प्रदान किया है।

आज का पाठ प्रलोभन, पाप और मृत्यु जैसे मानवीय सच्चाइयों को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। उत्पति ग्रन्थ से आज का पहला पाठ ईश्वर द्वारा रचित हमारे पूवर्ज आदम और हवा की मासूमियत और ईश्वर की पवित्र सन्तान के रुप में प्रस्तुत करते हैं। उनके जीवन की स्थिरता और निवास स्थान के लिए ईश्वर ने एक सुन्दर आदम वाटिका को बनाया। लेकिन शैतान एक साँप के रुप में आदम और हेवा को प्रलोभन में डालने के लिए उनके बीच में आता है। वे ईश्वर कि आज्ञायों को छोड़कर शैतान के प्रपंचों में फंसकर प्रलोभनों का शिकार हो जाते हैं। इसके फलस्वरुप वे ईश्वर की कृपाओं से वंचित हो जाते हैं और ईश्वर की पवित्र सन्तान होने का सौभाग्य खो देते है और उनकी मासूमियत चली जाती है।

परन्तु ईश्वर उन्हें पूरी तरह से नहीं छोड़ देता है। वह हम मनुष्यों पर सदा के लिए छोड़ देता है कि हम ईश्वर से जुड़े रहते हैं या नहीं क्योंकि हमारा ईश्वर अति दयालु और दया के श्रोत हैं। जब हम ईमानदारी से अपने पापों के प्रति पछतावा करते हैं और आज के भजन अनुवाक्य **"हे ईश्वर हम पर दया कर क्योंकि हमने आपके विरुध्द पाप किया है"** की तरह पछतापी हृदय से ईश्वर के पास

आते हैं तो वह हमारे गुनाहों और कसूरों को माफ करते हैं।

आज का दूसरा पाठ रोमियों के नाम संत पौलूस के पत्र में येसु ख्रीस्त के मानवीय जन्म और ईश्वरीय अवतार के उद्देश्य को उलिखित किया गया है। येसु ख्रीस्त इस दुनिया में खोई हुई मानवीय गरिमा और ईश्वरीय कृपा को पुर्नस्थापित करने के लिए आए हैं। आदम, हेवा और उनकी सन्तान ईश्वरीय अवाज्ञाओं के कारण ईश्वरीय कृपाओं और मानवीय गरिमा को खो चुके थे जिसे प्रभु येसु ख्रीस्त ने अपने क्रूस मरण तक पिता ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी बनकर हमें दुनियायी पापों से मुक्ति दिलाई। इस तरह से प्रभु येसु ख्रीस्त की आज्ञाकारिता विश्वासियों के लिए अनुग्रह, औचित्य और नया जीवन लाती है।

आज का सुसमाचार येसु ख्रीस्त के प्रलोभन और उनके प्रेरितिक कार्य की तैयारी के चालीस दिनों की गहन उपवास और प्रार्थना की चर्चा करती है।

शैतान जिसने हमारे पूर्वजों को प्रलोभित किया उसी ने येसु ख्रीस्त को उनके सांसारिक जीवन में प्रलोभन में डालने की कोशिश की और आज भी हम विश्वासियों को उन्ही शैतान के प्रंपचों से गुजरना पड़ता है। मनुष्य कमजोर हैं इसलिए हम प्रलाभनों और शैतान के हर बुरी योजनाओं का शिकार बनते हैं। और इस प्रकार ईश्वरीय कृपाओं से वंचित हो जाते हैं।

आज के इस आधुनिक युग जिस प्रलोभन और पाप जिसका हम सामना करते हैं वे हैं सत्ता की लड़ाई के लिए बेलगाम प्रतिस्पर्धा, भौतिक सुख के लिए बिना कोई नैतिक विचार के ज्यादा से ज्यादा धन इकट्ठा करना इत्यादि, ईश्वर प्रदत संसाधनो का दोहन, वातावरण प्रदूशण (जल, वायु) के माध्यम से, कमजोर तबके के लोगों (विधवा, एकल अभिभावक, अनाथ, वृध्द नागरिक, शरीरिक और मानसिक निशक्त) की गरिमा को अनदेखा करना, मजदूरों को कम मेहनाताना देना, अपने स्वार्थ के लिए अत्याधिक सम्पति का संचय और हमारे भाइयों और बहनों की तत्काल जरुरतो को दर किनार करना, मानवीय भाईचारा, सार्वजनिक हित को बढ़ावा देने में हमारी विफलता इत्यादि इनकी एक लम्बी सूची है।

चालीसा का यह पवित्र काल हमें याद दिलाता है कि हम सब अपने भाईयों और बहनों के रखवाले हैं क्योंकि हमारा सांसारिक जीवन अनिवार्य रुप से सामुदायिक है जो परोपकार और भाईचारे का मिसाल है जिसे कायम रखना हमारा कतर्व्य है जिस प्रकार आदम वाटिका की ईश्वर रचित जैव विविधता सभी प्राणियों के निवास स्थान के लिए एक मिसाल थी।

चालीसा का यह समय हमें अपने बपतिस्मा की बुलाहट और दुनिया मे ख्रीस्तीय प्रेरितिक कार्य के बारे में याद दिलाता है। ख्रीस्तीय बुलाहट अनिवार्य रुप से विभिन्न प्रकार के प्रलोभनों और जो जीवन को अमानवीय बनाता है उसका रोकथाम करने के लिए है। दूसरी तरफ वास्तव में ईश्वर द्वारा प्रदत सभी व्यक्तियों के गरिमा को ईश्वरीय रुप में पहचाने और जीवन के पवित्र मूल्यों को कायम रखें। इस दुनिया में हमारा ख्रीस्तीय प्रेरितिक कार्य दुनिया को ईश्वर के राज्य के रुप में तब्दील करना है जहाँ न्याय, शान्ति, विकास, ईमानदारी और भातृ मानवीय भावनाओं का पोषण होता है और कायम रखा जाता है।

कैरीतास इण्डिया, कैथोलिक विशप्स कॉन्फ्रेंस ऑफ इण्डिया का एक राष्ट्रीय सामाजिक प्रकोष्ठ है जो मानवीय कार्यकलापों और मानवीय विकास के पहल पर काम करती है, प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक डायोसिस मे भूख और बीमारी पर अपनी वार्षिक अभियान चलाती है। **"समृद्ध जीवन, सतत आजीविका"** इस वर्ष के चालीसा अभियान का विषय वस्तु है। इस धरती पर कैथलिक कलीसिया का एक मिशन मानवीय जीवन और जैविक विविधता को सत्त बनाना भी विशेष रुप से शामिल है। जीवन को सत्त बनाने का मतलब है कि सभी स्तरों पर जीवन की पवित्रता अपने सभी प्रकार के कामों को पहचानना एवं उनकी महत्व को बढ़ावा देना है। सबल आजीविका एक माध्यम है जिसके जरिये लोग अपनी बुनियादी और परिवारों की जरुरतों को उपलब्ध संसाधनो के द्वारा पूरा कर सकते हैं।

कलीसिया अपने विभिन्न पहलों के द्वारा सतत् आजीविका और सत्त जीवन को आगे बढ़ाती है। सभी विश्वासी कलीसिया के इस प्रेरितिक कार्य में सहभागी होते हैं। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कलीसिया ने अर्न्तराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और डायोसिसन करीतास और सामाजिक प्रकोष्ठों की स्थापना की है। जैसा कि हम आज चालीसे के पहले रविवार में प्रवेश कर रहें हैं विशेषकर गरीबों और जरुरतमदों के लिए उनके स्थायी और सम्मानजनक आजीविका अवसर प्रदान करने का प्रयास कर अपने ख्रीस्तीय विश्वास को ठोस कार्यों में लगाकर हमारी सामाजिक प्रतिबध्दता को पहचाने और जीवन के हरेक पहलु को बढ़ावा

देकर इसे कायम रखें एंव अपने ख्रीस्तीय विश्वास को नवनीकृत करें। आइए हम करीतास इण्डिया एवं कलीसिया के दूसरे सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर अपने भाइयों एवं बहनों को एक नई उम्मीद दें जिन्हे हमारे प्यार, देखभाल, सर्मथन और भाईचारे की जरुरत है। **आमेन!**

विश्वासियों की प्रार्थनायें

अनुष्ठानकर्ता – प्यारे भाइयो एवं बहनो पवित्र माता कलीसिया हमें अपने प्रेममय पिता पर भरोसा रखने के लिए आमंत्रित करती है क्योंकि वह सदा हमारे बीच सक्रिय रहते हैं। जैसे कि हम चालीसा काल की शुरुआत करते हैं पिता ईश्वर हमें आश्वस्त करते हैं कि वह अपने बेटे के प्रलोभनों पर विजय द्वारा हमारे साथ रहेगें जैसे हम अपने जिन्दगी की विरानियों और कठिनाइयों से गुजरेंगें। इस विश्वास के साथ आइए हम अपना निवेदन पिता ईश्वर को चढ़ायें

उत्तर – हे प्रभु हमारी पार्थना सुन।

1. हम अपने धर्मपिता पॉप फ्रान्सिस, कार्डिनल, विशपों, पुरोहितों और सभी लोकधर्मियों के लिए प्रार्थना करे कि वे इस चालीसे के इस विषेश अवसर पर आपके प्यार और दया का गवाह बनें। इसके लिए हम पिता ईश्वर से प्रार्थना करें – **हे प्रभु हमारी पार्थना सुन।**
2. हे प्रभु हम अपने देश के नेताओं के लिए प्रार्थना करते हैं कि वे हर तरह से जीवन की स्थायित्वता को विषेशकर गरीबों, जरुरतमदों और बेरोजगारों के लिए आजीविका के अवसर प्रदान कर मानवीय जीवन के मुल्यों का सम्मान करें। इसके लिए हम पिता ईश्वर से प्रार्थना करें – **हे प्रभु हमारी पार्थना सुन।**
3. सभी ख्रीस्तीय भाइयों के लिए प्रार्थना करें कि यह चालीसा का काल प्रलोभनों और स्वार्थो को त्याग नवनीकरण समय हो जिससे कि हम एक नई दुनिया बना सकें जहाँ सभी प्रेम, शान्ति और भाईचारे के साथ रह सकें। इसके लिए हम पिता ईश्वर से प्रार्थना करें – **हे प्रभु हमारी पार्थना सुन।**
4. हे प्रभु हम बीमार और पीड़ित लोगों के लिए प्रार्थना करतें हैं साथ ही साथ उनके लिए जिनके पास अपने जीवन यापन के लिए रोजगार के कोई विकल्प नहीं हैं। हे प्रभु जीवन के इस मुश्किल दौर में उनकी मदद कीजिए जिससे कि वे इसका सामना कर सकें साथ ही साथ चालीसा का यह पवित्र समय उनके लिए उम्मीद और नई शुरुआत लेकर आये। इसके लिए हम पिता ईश्वर से प्रार्थना करें – **हे प्रभु हमारी पार्थना सुन।**
5. **"मैं इसलिए आया कि वे जीवन पायें और बहुतायत से पायें।"** इस पवित्र ख्रीस्तत्याग में उपस्थित सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें कि ईश्वर के वचनों से प्रबध्द होकर, जीवन के वाहक बनें जिससे कि हमारे समाज के हाशिये पर रहने वाले लोग इस जीवन को बहुतायात में प्राप्त कर सकें। इसके लिए हम पिता ईश्वर से प्रार्थना करें – **हे प्रभु हमारी पार्थना सुन।**

निष्कर्ष

हे दयालु और प्रेमी पिता हम अपने जीवन के सारी कमजोरियों और अच्छाइयों को आपके समक्ष लाते हैं। हमारी प्रार्थनाओं और याचिकाओं को स्वीकार कर। जीवन की पूर्णता की बहुतायत को बढ़ावा देने में हमारे प्रयास को आर्शीवाद दीजिए जिससे कि लोगों मे जीवन जीने की एक नई उम्मीद कि किरण जगे। हम यह प्रार्थना करते हैं हमारे प्रभु ख्रीस्त के द्वारा आमेन!

(सौजन्यः फादर जॉली पुथेनपूरा, सहायक कार्यकारी निर्देशक, करीतास इण्डिया)

उपवास, अर्थात, दूसरों और सृष्टि के सभी लोगों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलना सीखना, हमारी व्यर्थता को संतुष्ट करने के लिए सब कुछ "भक्षण" से दूर हो जाना और प्यार के लिए पीड़ित होने के लिए तैयार होना, जो हमारे दिलों के खालीपन को भर सकता है।

प्रार्थना, जो हमें मूर्तिपूजा और हमारे अहंकार की आत्मनिर्भरता को त्यागना और प्रभु और उसकी दया की हमारी आवश्यकता को स्वीकार करना सिखाती है।

दान, जिससे हम भ्रम में खुद के लिए सब कुछ जमा करने के पागलपन से बच जाते है कि हम एक भविष्य को सुरक्षित कर सकते है।

आइए हम अपने स्वार्थ और आत्म–अवशोषण को पीछे छोड. दें और यीशु के पास जाएं। आइए हम अपने भाइयों और बहनों की ज़रुरत के मुताबिक खड़े हों, हमारे आध्यात्मिक और भौतिक वस्तुओं को उनके साथ साझा करें।

संत पिता फ्रांसिस
का चालीसा संदेश 2019

Caritas® INDIA
The Joy of Service...

Campaign Against Hunger & Disease | 2020

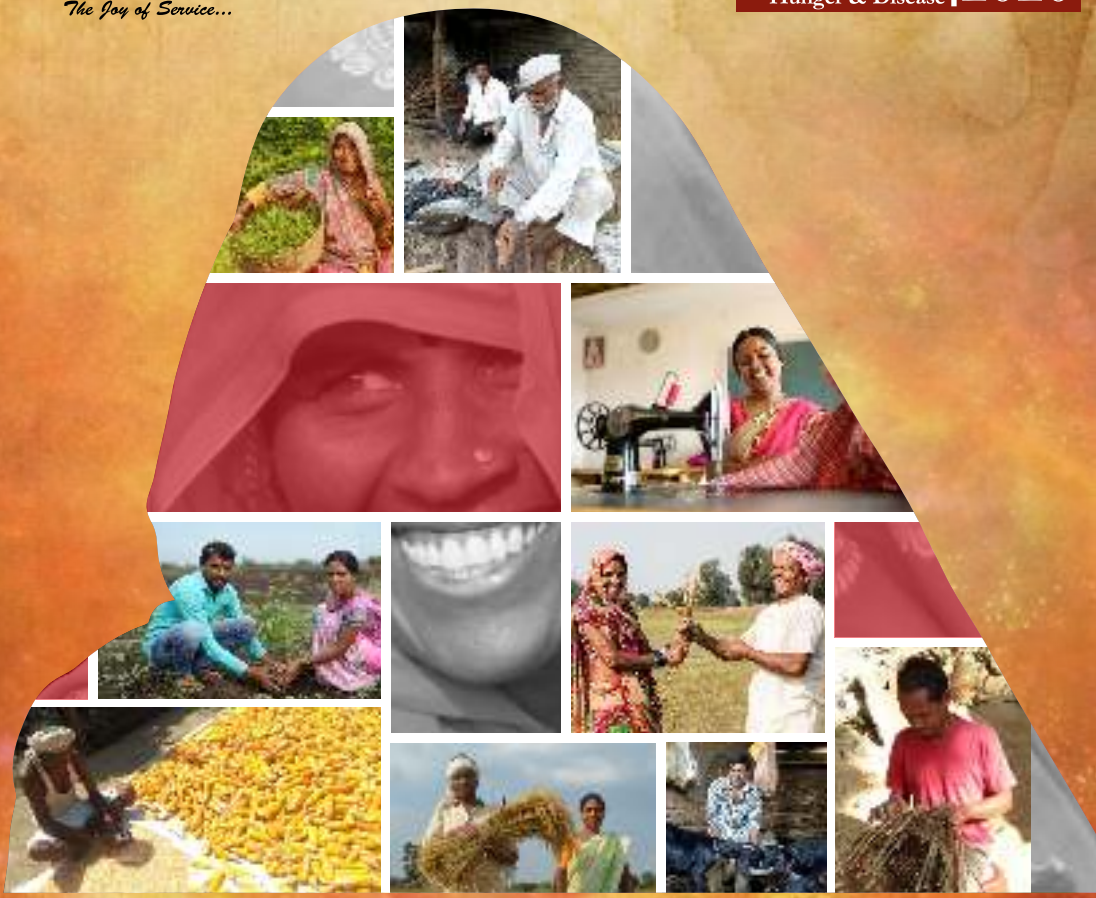

Sustain | Sustainable
Life | Livelihood
समृद्ध जीवनः सतत आजीविका

करीतास इण्डिया अपने वार्षिक चालीसा कालीन अभियान के तहत "**समृद्ध जीवनः सतत आजीविका**" के विषयवस्तु पर सभी को साथ आने के लिए आमंत्रित करती है कि वे एक उत्प्रेरक के रुप में प्रत्येक जन एक जन की मदद के दृष्टिकोण से लोगों तक अपनी पहुँच बनाकर" "**सतत आजीविका**" के लिए परिवर्तन का एक जरिया बने।

इस चालीसा काल में आइए हम संकल्प करें कि जीवन की निरंतरता के लिए आर्थिक और गैर आर्थिक रुप से अपना योगदान दें। इसका मतलब यह नहीं कि हम गरीबी उन्मूलन के लिए काम करें बल्कि लोगों में क्षमता वृध्दि करें जिससे कि वे जीवन में आने वाले बाधाओं / रुकावटों का सामना कर सकें। इसका मतलब यह भी है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग स्थायी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर जीवन व्यतीत करना शुरु करें जिससे कि कार्बन उर्त्सजन को कम कर सकें। इसके लिए हम पर्यावरण के अनुकूल यात्रा के तरीके, बेकार के उत्पाद का पुनःचक्रित और समुदाय को सक्षम बनाने की पहल को बढ़ावा दे सकते हैं।